

Inhalt

| | |
|--------------------------------------|----|
| Schöpfung | 7 |
| Hymnus | 8 |
| Die Stille | 9 |
| Verklärung | 10 |
| Geglaubtes Glück | 11 |
| Die Höchste, jene Liebe... | 12 |
| Das Schweigen Gottes | 13 |
| Letzter Überhang | 14 |
| Im Anfang | 15 |
| Was tust du... | 16 |
| Wo du wohnst... | 17 |
| Herbst | 19 |
| Nachherbstliche Elegie | 22 |
| Ödswaige im Winter | 24 |
| Portrait eines Freundes | 26 |
| Blicke der Liebenden | 27 |
| Kruzifix im Maintal | 28 |
| Bedrohung | 29 |
| Selbstbeweinung | 31 |
| Nachmittag | 33 |
| Freundlicher Knecht des Lebens | 34 |
| Strom Liebe | 35 |
| Aufbruch | 36 |
| Im Traumschein | 37 |
| Nun singt oft leis... | 38 |
| Schwer gelingt mir mein Leben | 39 |
| Die Freude | 40 |
| Schicksalsgefühl | 41 |
| Es schlägt tausend Uhr | 43 |
| Mein Paradies | 44 |
| Bitte | 45 |
| Elegie | 46 |
| Ein Schatten Tod | 48 |
| Wir sind alle wie Reiter im Regen... | 49 |
| Heimkehr | 51 |
| Einst und nun | 52 |
| Für Ann Vaubel | |
| in den »heimwärtsschauenden Himmel« | 53 |
| Tief ins Glas geguckt | 54 |
| Zwei Einsamkeiten | 56 |
| Wir sind so wenig auf der Welt | 57 |
| Bewegtes Ruhn | 58 |
| Mein kleiner Garten | 59 |

| | |
|---------------------------|----|
| Ewig | 60 |
| Feldsteig | 61 |
| Wolken | 62 |
| Wolkenhymne | 63 |
| Mondaufgang | 64 |
| Idealistische Empfindung | 65 |
| Morgengang | 66 |
| Wälder am Abend | 67 |
| Morgens | 68 |
| Erde | 69 |
| Jede Nacht | 71 |
| Zwischen mir und dir | 72 |
| Botin, Süsse | 74 |
| Auf Wolken komm ich... | 75 |
| Glück und Dank | 76 |
| Fiederfuss und Muntermund | 77 |
| Lieblob | 78 |
| Ich bring dir eine Ruh | 79 |
| Drin und Draus | 80 |
| Frag nicht, Herz | 81 |
| Kinder-Gedichte | 82 |
| Fragmente | 85 |
| Widmung | 87 |
| Nachwort | 89 |